तत्त्व vel **तत्व** *n.* cf. gr. 633. (a pronom. *neut.* तत् id, hoc, illud, s. त्व) 1) veritas. Dr. 2.5. N. 16.38. Bh. 3.28. 2) natura, vera natura. N. 19.2.28. A. 4.37. Bh. 18.1.

तत्त्वतस् *Adv.* (a praec. s. तस्) secundum veritatem, veram naturam; accurate, penitus. Bh. 4.9.

तत्पर (hunc, hanc, hoc, hos etc. tanquam praecipuum habens. *bah.* e तत् et पर *n.*, v. gr. §. 666.) plane addictus, plane deditus, *in fine compp. ubi* तत् *redundat, e.c.* N. 16.26.: ध्यानतत्पर = ध्यानपर meditationi addictus.

तत्परता *f.* (a praec. s. ता) *Abstractum praec.* Hit. 128.21.

तत्र (a stirpe pronominali त s. त्र) 1) ibi, hic, illic. In. 1.6. — *Pro locat.* तस्मिन्. Br. 1.22. (तत्र वासे i.e. तस्मिन् वासे in hac habitatione, *cf.* एकत्र). तत्र तत्र hic et illic, ubique. In. 2.31. Su. 1.33. N. 17.36. 2) illuc, in illum locum. H. 2.16. Br. 2.3. (Cf. goth. *thathrô* inde, v. gr. comp. §. 420.)

तत्रत्य (a praec. s. त्य) qui illic est, *dortig.* Hit. 88.12.

तत्रभवत् *m.* (e तत्र illic et भवत्) *in linguâ scenicâ* excellens, praeclarus, dominus, *de persona absente*, (ita अत्रभवत् de personâ praesente *«der Vortreffliche hier»*). Ur. 15.12. infr.

तत्रभवती *Fem. praec.* Ur. 15.11. infr.

तत्व v. तत्त्व.

तथा (e stirpe pronom. त, s. था) sic, ita. Dr. 4.1.; tam. H. 3.3. A. 7.13. — *Particula assentiendi* ita, vero, sane. H. 4.59. Su. 3.22. *Repetitum respondet ad* यथा यथा (quomodocunque). N. 8.14. — तथा ऽपि nihilominus, tamen. Hit. 11.5. 15.10.

तथ्य (a praec. s. य) *Adj.* verus. *Subst. n.* verum. N. 5.23.

तद् v. तत्.

तदनन्तर (*tatp.* e तत् et अनन्तर intervalli expers, proximus) ejus proximus. N. 22.16.

तदा *Adv.* (a stirpe pronom. त s. दा) illo tempore, tunc. H. 1.15. — *Respondet ad* यदा quando. Bh. 2.52. 4.7. Dr. 5.18. — *Saepe redundat, ubi in narrationibus eventus tempus definit, quod jam aliis temporis adverbiis sufficienter indicatum est.* H. 1.30. N. 20.3. — In *apodosi post* यदि *valet nostrum* so. Lass. 7.13.: यद्य् एषा मम भार्या भवति तदा जीवामि.

तदानीम् (v. gr. 652. s. दानीम् et cf. इदानीम्) tunc. Dr. 6.10.

तदीय (a तत् s. ईय, v. gr. 288.) 1) qui ejus, hujus, illius, eorum, earum est. Ragh. 2.28. 2) *i.q. primitivum* तत्, *e.c.* Ragh. 1.81.: सुतान् तदीयां सुरभेः कृत्वा प्रतिनिधिम् «filiam hanc»; P. 2.: तदीयम् अस्ति नौ धनम्.

तद्वत् (e तत् hoc et वत् sicut) ita, sic. Lass. 24.7.

1. **तन्** 8. *P. A.* तनोमि, तन्वे extendere, expandere, facere, perficere, creare. Ragh. 3.25.: पितुर् मुदन् ततान; Nalod. 1.20.: गतिम् इह नलो ऽतनोद् यानेन (Schol. अकरोत्). — *Pass.* तन्ये et तायें (gr. 504.); *part. pass.* तत. Bh. 2.17. 8.22.: येन सर्वम् इदम् ततम्. (Gr. *τάνυμαι, τείνω*; lat. *tendo*, adjecto *d*, *tenuis, tener*; goth. *thanja* tendo; russ. *tonju* tenuo; lith. *tempju* tendo, adjecto *p*; hib. *tana* «thin, slender, lean», *tanaighim* «I make thin» = *Caus.* तानयामि; cambro-brit. *taenu* «to spread, to expand».)

c. अनु *i.q. simpl.* Mah. 3.12681.: धर्मम् एवा ऽनुतन्वती.

c. अव tegere. R. Schl. I. 17.14.: यानङ्ग कम्बलावततम्; II. 93.4.: अवतता वारणैर् भूः.

c. वि *i. q. simpl.* Nalod. 1.54.: व्यतनोत् सुयोगम् (Schol. देवार्चनम् अकरोत्); Bhag. 4.32.: एवम् बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे; Man. 3.28.: वितते यज्ञे.

c. सम् praef. अनु extendere, expandere. Bhag. 15.2.: अधश्च मूलान्य् अनुसन्ततानि.

2. **तन्** 1 et 10. *P.* तनामि, तानयामि (श्रद्धोपतापयोः *K.*) credere; vexare.

तनय *m.* (r. तन् s. अय, *cf.* सन्तान) filius. N. 13.34.

तनया *f.* (*fem.* praec.) filia. N. 12.12.

तनु (r. तन् s. उ) 1) *Adj.* (*fem.* तनु, तनू, तन्वी) tenuis. Dr. 7.7. 2) *Subst. f. n.* corpus. Dr. 6.20. In. 1.33. (Gr. *τανυ* in initio compp.; lat. *tenuis*, adjecto *i*, v. गुरु; germ.